कैरली

2015-16

കൈരളി

KAIRALI

केंद्रीय उत्पाद, सीमा शुल्क एवं सेवा कर आयुक्त का कार्यालय

OFFICE OF THE COMMISSIONER OF CENTRAL EXCISE, CUSTOMS & SERVICE TAX

केंद्रीय राजस्व भवन /C.R. BUILDING, आई एस प्रेस रोड / I.S. PRESS ROAD, कोचिन /COCHIN - 682 018

Central Excise, Customs & Service Tax
Commissionerate, Kochi

कैरली

केन्द्रीय उत्पाद ,सीमा शुल्क एवं सेवा कर आयुक्तालय
आई.एस. प्रेस रोड, कोचिन -18
की
त्रिभाषी गृह पत्रिका

Kairali

Trilingual Departmental Magazine
of
Central Excise, Customs & Service Tax Commissionerate
C.R.Building, I.S.Press Road, Cochin-18

.....

विभागीय गृह पत्रिका वर्ष 2015-16

.....

प्रधान संपादक : रेश्मा लखानी, केन्द्रीय उत्पाद,सीमाशुल्क एवं सेवा कर आयुक्त
प्रबंध संपादक एवं राजभाषा अधिकारी : श्री अमरनाथ केसरी, केन्द्रीय उत्पाद,सीमाशुल्क एवं सेवा कर संयुक्त आयुक्त

संपादक : श्रीमती रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुत्तु, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

.....

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं, इनमें संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है ।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	मुज़िरिस पत्तन की खोज	अमरनाथ केसरी	9-11
2	संगीत के लाभ	टी.पी.सलीम कुमार	12-13
3	गज़ल	अजीत कुमार गुप्ता	14
4	इंसान घर बदलता है	शाजी जॉन	14
5	भाषा स्थिर नहीं रहती	रोसेलिंड जोस	15
6	ज़िंदगी की भागदौड़	किरण शर्मा	16
7	काल और समय का मिलन	एन.ललिता	17
8	क्या हम और अधिक अकेला महसूस कर रहे हैं ?	रोसेलिंड जोस	18
9	अपंगता	रितुबाला	19
10	एहसास	गौरव वत्स	20
11	मुस्कान	किरण शर्मा	21
12	केरल के बारे में दस दिलचस्प बातें	सेतु आर	22
13	ज़िंदगी में खुशी पाने का रहस्य	डॉ अनेज सोमराज	23
14	हसरतों के धागे	किरण शर्मा	24
15	ग्लास को नीचे रख दीजिये	अनंत विक्रम सिंह	25
16	फोटो -हिन्दी सप्ताह समारोह-2015, स्वतंत्रता दिवस -2015, ओणम-2015,भोजनालय उत्घाटन, नव वर्ष समारोह -2016, राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता, केंद्रीय राजस्व सांस्कृतिक एवं खेल मीट -2016 गणतन्त्र दिवस-2016, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दिवस-2016, महिला दिवस -2016, पाला रेंज उत्घाटन, सभा भवन उत्घाटन, वैबसाइट उत्घाटन,		26-37
17	माँ	गौरव वत्स	38
18	हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह समारोह, 2015 पर संक्षिप्त रिपोर्ट	राजभाषा अनुभाग	39-40
19	Finding Happiness in Transfer	Ranabir Bose	41
20	Percy Jackson and the Lightning Thief	Riya Salim	42
21	Quote from "Walden" by Henry David Thoreau	Abraham Renn	42
22	M.R.R.-Presidential Awardee	N. Lalita	43
23	A Valentine Wish	N. Lalita	44
24	Monsoon	Rohit Ramachandran	44
25	10 Interesting facts about Kerala	Sethu R.	45
26	Cycling your way to Health	Bhaskarnath	46-48
27	Metaphysics	Rajesh N.V.	49
28	Happiness	Mini V.K.	50-51
29	The Era of Jack of all trades	Ann Mary Benny	52
30	Kaathirikkaam (A grade and II prize winning Malayalam poem in Ekm.district youth festival)	Aparna Shankar	53
31	Kshanabhanguram	T. P. Salim Kumar	54
32	चुटकुले	राजभाषा अनुभाग	55-56
33	बच्चों की चित्रकला		57-58

मुख पृष्ठ -केरल का प्रसिद्द नावघर (Houseboat found in Kerala Lakes)

अंतिम कवर पृष्ठ - केरल का मुज़िरिस विरासत- मुज़िरिस विरासत स्मारक- कीयताली शिव मंदिर, चेरामन जुमा मस्जिद, कोट्टक्कावु चर्च, परवूर यहूदी आराधनालय (Kerala Muziris Heritage-Muziris heritage monuments - Kizhthali Siva Temple, Cheman Juma Masjid, Kottakkavu Church, Paravur Jewish Synagogue)

संरक्षक के संदेश

कोचिन आयुक्तालय की विभागीय पत्रिका "कैरली" प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । हिन्दी पत्रिका प्रकाशित करने का प्रमुख उद्देश्य है हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना। इस पत्रिका में हिन्दी के अलावा मलयालम एवं अंग्रेज़ी के लेख भी शामिल हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आप सबको मनोरंजक प्रतीत होगा और कार्यालय में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा ।

पत्रिका की सफल प्रस्तुति के लिए मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी व्यक्तियों को शुभकामनाएं देता हूं ।

विनोद कुमार

एम. विनोद कुमार, भा.रा.से.
मुख्य आयुक्त

प्रधान सपादक की कलम से

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, कोचिन की विभागीय पत्रिका "कैरली" आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है ।

राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो सके, यह हम सबकी प्रतिबद्धता और दायित्व है । इस आयुक्तालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मेरा अनुरोध है कि वे राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए अपने कार्य में इसका अत्यधिक प्रयोग करें ।

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े हुए सभी अधिकारीगण जिन्होंने पत्रिका को आप तक पहूंचाने में अथक परिश्रम किया है, वे धन्यवाद के पात्र हैं ।

रेश्मा लखानी

रेश्मा लखानी, भा.रा.से.

आयुक्त

संदेश

मुझे इस बात पर खुशी हो रही है कि विभागीय पत्रिका कैरली का प्रकाशन किया जा रहा है । भारत के संविधान ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी है । अतः अधिकारियों और कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है । मुझे विश्वास है कि विभागीय पत्रिका का प्रकाशन सरकारी काम -काज हिन्दी में करने के लिए प्रेरणादायक होगा ।

पत्रिका को अपनी रचनाओं से समृद्ध करने वाले रचनाकारों का अभिनंदन करता हूं और इस प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं ।

अमरनाथ केसरी, भा.रा.से.
संयुक्त आयुक्त एवं राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

"भारत में अनेक समृद्ध भाषाएं हैं । इस देश में लगभग 1692 मातृभाषाएं और 200 वर्गीकृत छोटी -छोटी बोलियां और 22 अनुसूचित भाषाएं है और इस राष्ट्र की एकता को अक्षुण्ण रखने के लिए हिन्दी एक अमोघ अस्त्र है ।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343, राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) तथा उसके अनुसार बनाए गए राजभाषा नियम,1976 एवं समय समय पर जारी सरकारी आदेशों के अनुसार राजभाषा हिन्दी को सरकारी काम -काज में शनैः - शनैः अँग्रेजी का स्थान लेना है । इसके लिए सभी कर्मचारियों को गृह मंत्रालय की हिन्दी शिक्षण योजना के अंतरगत हिन्दी का सेवकालीन प्रशिक्षण दिया जा रहा है । इस प्रशिक्षण के उपरांत अपने -अपने कार्यालय का काम हिन्दी में करने का अभ्यास कराने एवं हिन्दी में काम शुरू करने से संबद्ध झिझक एवं हिचकिचाहट दूर करने की दृष्टि से कर्मचारियों के लिए राजभाषा हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित करके एक विशेष प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है ।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हिंदी को बढ़ावा देने हेतु एक कदम है ।

इस पत्रिका में हिन्दी के साथ-साथ मलयालम और अँग्रेजी के भी लेख और कविताओं आदि का समावेश किया गया है । इस पत्रिका के माध्यम से हमारा प्रयास है कि सभी भाषाओं के बीच सामंजस्य बनाए रखा जाए । इस पत्रिका के संबंध में आपके मूल्यवान विचारों और आलोचना से हमें अवश्य अवगत करायें, ताकि कैरली के आगामी अंक को और अधिक सुरुचिपूर्ण और उपयोगी बना कर आपके हाथों में सौंपा जा सके ।

रोसेलिंड जोस

रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु

श्री अमरनाथ केसरी
संयुक्त आयुक्त

मुज़िरिस पत्तन की खोज

शहर में मैं नया नया था । एक वीकेंड पर सोचा कि कोचिन शहर के कुछ दर्शनीय स्थल देख लूं । तैयार होकर मैं सुबह -सुबह हिल पैलेस म्यूज़ियम पहुँच गया । हिल पैलेस कोचिन के तात्कालीन राजाओं का प्रशासनिक कार्यालय था, जिसे आजकल म्यूज़ियम में परिवर्तित कर दिया गया है । राज परिवार से संबन्धित विभिन्न वस्तुएं यहां प्रदर्शित है ।

दोपहर तक मैं म्यूज़ियम से बाहर आ गया था । किसी और जगह देखने की इच्छा से मैंने इंटरनेट पर खोज करना शुरू किया तो पता चला कि कोचिन से सटे पारावुर तालुका में 'पट्टनम' नामक जगह में प्राचीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं ।

मैं कार से पट्टनम के लिए निकल पड़ा । राष्ट्रीय महामार्ग 17 से तकरीबन 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नॉर्थ पारावुर से करीब 4 किलोमीटर की दूरी पर पट्टनम स्थित है । हायवे पर खोज करते -करते मैं पट्टनम पहुँच गया । रास्ते में लोगों ने बताया कि गाँव में स्थित मंदिर के करीब खुदाई स्थल है । मंदिर पहुँचकर उसके बगल में ही 'केरल ऐतिहासिक शोध परिषद' का बोर्ड दिखा जिस पर 'मुज़िरिस' के पुरातात्विक अवशेष संबन्धित जानकारी थी ।

संगम साहित्य (ईसा पूर्व 300 से 300 ई.तक) में चेर राज्य में स्थित 'मुज़िरिस' का उल्लेख हुआ है जिसमें यह बताया गया है कि पेरियार नदी के निकट बसे हुए इस बन्दरगाह में विदेशी व्यापारी बड़े -बड़े जहाजों में सोना लेकर आते थे और बदले में मसाले लेकर जाते थे । प्लिनी के 'नेचुरल हिस्ट्री' किताब (77ई.) में भी मुज़िरिस का वर्णन मिलता है ।

इन सभी साहित्य से यह पता चलता है कि पेरियार के तट पर ईसा पूर्व समय में एक प्रौढ़ सभ्यता थी जिसका व्यापारिक संबंध पश्चिमी देशों से था ।

इतिहासकारों के बीच समान्यतः यह मत है कि प्राचीन मुज़िरिस बन्दरगाह केरल के कोडंगलूर में स्थित था । 1341 में आई भीषण बाढ़ / भूकंप ने इस तट की स्थिति को बदल दिया और मुज़िरिस का नामोनिशान इतिहास के पन्नों से मिट गया । तत्पश्चात कोचिन बन्दरगाह व्यापारिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बना । कोडंगलूर व उसके इर्दगिर्द रोमन कालीन सिक्के की प्राप्ति हुई है । किन्तु कोडंगलूर में 1945 के बाद खुदाई के दौरान बहुत कुछ पुरातात्विक अवशेष नहीं मिले । कोडंगलूर से 10 किलोमीटर *दूरी पर* स्थित पट्टनम में वहाँ के निवासियों को जब काफी मात्रा में प्राचीन रोमन सिक्के तथा मिट्टी के बर्तन के टुकड़े मिले तब केरल ऐतिहासिक शोध परिषद के द्वारा 2007 से खुदाई शुरू की गई ।

पट्टनम(बन्दरगाह के लिए संस्कृत शब्द) की खुदाई में पाए गए पुरातात्विक अवशेष ईसा पूर्व 1000 से 1500 ई. के हैं । इसने केरल के इतिहास को 3000 ई. पीछे धकेल दिया है । खुदाई में पाए गए सामान यह दर्शाते हैं कि यहाँ के लोगों का व्यापारिक संबंध रोम, यूनान, अरब, चीन आदि देशों से था ।

पट्टनम पहुँचने के बाद मैं खुदाई स्थल को ढूँढने का प्रयास किया । रविवार का दिन था तथा वहां कोई चहल -पहल नहीं थीं । मंदिर के बगल से अंदर गाँव की तरफ पतली सी गली में मैंने अपनी गाड़ी बढ़ाई । आगे कुछ बच्चे घर -घर जाकर चंदा मांग रहे थे - शायद किसी स्थानीय उत्सव के लिए । पुरातात्विक उत्खनन के बारे में पूछने पर उन्होंने पहले अनभिज्ञता जाहिर की किन्तु मुज़िरिस का ज़िक्र करने पर उनमें से एक ने पास ही एक अहाते की तरफ इशारा किया । पास जाने पर मैंने पाया कि बाहर से दरवाज़ा बंद था

किन्तु अंदर झाँकने पर हरित पुरातत्व का एक पोस्टर दिखा । दरवाजे पर खटखटाने पर दो लड़के दिखे जिन्होंने बताया कि वे लोग इतिहास के छात्र हैं जो पुरातत्व में डिप्लोमा कर रहे हैं तथा साथ ही साथ उत्खनन में सहयोग कर रहे हैं । उन्होंने बताया कि उत्खनन स्थल से प्राप्त चीज़ों को नजदीक ही के एक परिसर में स्थित म्यूज़ियम में रखा गया है । फिर हमलोग म्यूज़ियम गए जो पब्लिक के लिए शायद 2016 के अंत तक खोला जाएगा ।

पट्टनम के उत्खनन में शहरी जीवन के सुविधाओं के प्रमाण मिले हैं जो 2000 साल प्राचीन हैं -ईंट, टाइल्स, टॉयलेट और ढेर सारी चीजें । महत्वपूर्ण खोज में 6 मीटर लंबी नाव मिली है जो ईसा पूर्व 200 -100 ईस्वी के समय की है ।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या पट्टनम ही प्राचीन मुज़िरिस पत्तन है ? इतिहासकारों के बीच मतभेद की स्थिति बनी हुई है । जब केरल ऐतिहासिक शोध परिषद ने पट्टनम की खुदाई के बाद मुज़िरिस की खोज की घोषणा की तो कई इतिहासकारों ने इस पर आपत्ति उठाई । रोमिला थापर के अनुसार जब तक कोडंगलूर की और खुदाई नहीं हो जाती, पट्टनम ही मुज़िरिस है, यह मानना सही नहीं होगा ।

पट्टनम के उत्खनन में प्राप्त वस्तुओं को म्यूज़ियम में बहुत व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित किया गया है । रोमन देवी की अलंकृत सील, रंगीन रोमन जार, लंबी गर्दन वाले सुराही, साज -सज्जा के सामान इत्यादि ।

म्यूज़ियम से बाहर निकालने पर जब छात्रों ने आगंतुक रजिस्टर पर अपना मंतव्य लिखने को कहा तो मैंने यह लिखा कि आने वाले दिनों में यह जगह एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में विख्यात होगा ।

संगीत के लाभ

-टी.पी. सलीम कुमार
सहायक आयुक्त

"संगीत एक नैतिक कानून है। यह ब्रह्मांड के लिए एक आत्मा, मन को पंख, कल्पना के लिए उड़ान, उदासी के लिए एक आनंद, समस्त कार्य करने के लिए जीवन देता है ।" .. *प्लेटो*

संगीत मनोरंजन का एक रूप है। विभिन्न कलाकारों द्वारा अद्भुत गीत बनाने के लिए विविध प्रकार के उपकरणों का उपयोग भी होता है । हालांकि, मनोरंजन संगीत का एकमात्र लाभ नहीं है, उस के कई अन्य लाभ हैं ।

अध्ययनों से पता चलता है कि जब गर्भवती महिलाएं संगीत सुनने के लिए समय ले रही हैं तो वे उनके बच्चों के मस्तिष्क के विकास की मदद कर रही हैं । विशेषज्ञों का कहना है कि जब ये बच्चे बड़े हो जाते हैं , वे दूसरों की तुलना में होशियार बन जाते हैं । संगीत गर्भवती महिलाओं की भी मदद करता है, यह गर्भावस्था के कारण उत्पन्न उनके तनाव को कम कर देता है । वे प्रसव के समय और अधिक तैयार और शांत रहते हैं ।

अनुसंधान सिद्ध किया है संगीत भाषण और स्मृति को विकसित करने में मदद करता है । छोटे बच्चों को किसी भी संगीत वाद्य चलाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, तो वे शैक्षिक अध्ययनों में उत्कृष्टता प्राप्त करने की सबसे अधिक संभावना है। संगीत के साथ साथ, संगीत नोट को याद करना भी आवश्यक हो जाएगा, इस प्रकार उनकी स्मृति शक्ति में सुधार आयेगा । इस तरह जो वे अपने संगीत की शिक्षा से सीख लेते हैं वे स्कूल में उनके अन्य विषयों के लिए भी लागू किया जा सकता है ।

संगीत युवा बच्चों को अनुशासन सिखाता है । अगर वे जानते हैं कि संगीत उनके जीवन का एक हिस्सा है, वे सख्ती से निर्देशों का पालन करके अपनी प्रतिभा में वृद्धि लाएगी । उदाहरण के लिए, क्योंकि संगीत में प्रशिक्षण मिलने के दौरान वे अपने आकाओं के महत्व को जानते हैं, वे अपने बड़ों के सामने भी आज्ञाकारी होने की अधिक संभावना है ।

संगीत किशोरों के लिए सबसे अच्छा शौक है । अलग-अलग कंप्यूटर गेमों में समय बर्बाद करने के बजाय यह बहतर होगा कि यदि युवा अपने पसंदीदा संगीत वाद्य खेलने के लिए या एक गाना गाने के अभ्यास में समय बिताने लगें । एक दिन जब उन्हें प्रदर्शन करने का अवसर मिल जाता है तब वे दूसरों के प्रशंसा मिलने पर उपलब्धि की एक भावना महसूस करेंगे ।

संगीत की मदद से लोग अपने चिरकालिक दर्द और भावनात्मक विकारों को दूर कर सकते हैं। जब यह लोग संगीत सुनकर आराम करेंगे तो उन्हें पर्याप्त नींद मिल सकता । जब वे संगीत सुनने लगेंगे तो संगीत उनके सामने से उनके वर्तमान दुःखों को हटाकर एक सुखद एहसास की ओर ले जाएगा । हम अपने पसंदीदा संगीत का चयन करके अपने दिल के दर्द को दूर कर सकते हैं। मेरे मलयाली दोस्त ने मुझे बताया कि वह येसुदास के नवीनतम धुन सुनने के बाद वह ताज़ा हो जाएगा । देश भर के लोगों के साथ यही हो रहा है चाहे वह किशोर कुमार, मुकेश, मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर या आशा भोसले हो । कुछ लोगों को डॉ बालमुरलीकृष्ण और एम.एस. सुब्बलक्ष्मी के कर्नाटक संगीत में गाये हुई कीर्तनों में सांत्वना मिल सकती है तो कुछ अन्य लोगों को गुलाम अली, मेहदी हसन या हरिहरन के रोमांटिक गजलों में ।

संगीत में परिवारों में बीच खुशियाँ लाने या मस्ती से भरने की क्षमता है । जब एक परिवार संगीत के साथ अपने घर के लिविंग रूम में एक साथ बैठता है तो उन्हें अपने एकजुटता के उन क्षणों में अधिक मजा आएगा। दूसरी तरफ एक पार्टी का आनंद मेहमानों द्वारा केवल संगीत के साथ ही उठाया जा सकता है, अन्यथा पार्टी बहुत उदास लगेगा ।

उपकरणों के साथ संगीत भगवान की पूजा में भी प्रयोग किया जाता है। विभिन्न धर्मों द्वारा विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाएं अपना रही है लेकिन सभी संगीत का उपयोग कर रहे हैं । वास्तव में संगीत, भगवान से एक उपहार है, लोगों को उसकी सराहना करनी चाहिए ।

कार्यालय में तनाव से राहत पाने के लिए और दक्षता में सुधार लाने हेतु यदि नरम संगीत सुनें तो बहतर होगा । यही वजह है कि भारतीय स्टेट बैंक जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के दिग्गजों ने शुरुआत के तौर पर उनके चयनित शाखाओं में संगीत शुरू कर दिया है । कोई भी कोई गाना न गाने से बेहतर होगा कि सब मिलकर एक साथ एक गाना गाएं ।

****

अजीत कुमार गुप्ता
निरीक्षक,विधिक अनुभाग

गजल

हम तो सिर्फ तुमपे ही मरते हैं जमाने मैं-2

जहां जाते हैं, ढूंढते हैं तेरे चेहरे को

पर तुमसा न कोई जाम है मेहखाने मैं

हम तो सिर्फ तुमपे ही मरते हैं जमाने मैं।

जब से देखा है तुझे तू है मेरी यादों मैं

उम्र बीत जाएगी तुमको भूल जाने में

हम तो सिर्फ तुमपे ही मरते हैं जमाने मैं।

तेरे करीब हूँ तो लगता है जैसे जिंदा हूँ

कुछ देर और रुको, जल्दी क्या है जाने मैं

हम तो सिर्फ तुमपे ही मरते हैं जमाने मैं।

चलो कहीं चलते हैं, ख्वाब बुन लेते हैं

क्या रखा है यूं मुझसे रूठ जाने मैं

हम तो सिर्फ तुमपे ही मरते हैं जमाने मैं।

फिर न कहना कि नफ़रत है तुम्हें मुझसे

क्या सुकून मिलता है मुझको सताने मैं

हम तो सिर्फ तुमपे ही मरते हैं जमाने मैं।

शाजी जॉन
सहायक आयुक्त (द्वारा संकलित)

इंसान घर बदलता है.....

इंसान घर बदलता है
लिबास बदलता है
दोस्त बदलता है
फिर भी परेशान क्यों रहता है ?
क्यों वो खुद को नहीं बदलता

मिर्ज़ा गालिब ने कहा है
"उम्र भर गालिब
यही भूल करता रहा
धूल चेहरे पे थी
और आईना साफ करता रहा"

रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु
कनिष्ठ अनुवादक

भाषा स्थिर नहीं रहती

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली -भांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकता है ।

भाषा स्थिर नहीं रहती, उसमें सदा परिवर्तन हुआ करते हैं । विद्वानों का अनुमान है कि कोई भी प्रचलित भाषा एक हज़ार वर्ष से अधिक समय तक एक -सी नहीं रह सकती । जो हिन्दी हम लोग आजकल बोलते हैं वह हमारे प्रपितामह आदि के समय में ठीक इसी रूप में न बोली जाती थी और न उन लोगों की हिन्दी वैसी थी, जैसी महाराज पृथ्वीराज के समय में बोली जाती थी । अपने पूर्वजों की भाषा की खोज करते -करते हमें अंत में एक ऐसी हिन्दी भाषा का पता लगेगा, जो हमारे लिए एक अपरिचित भाषा के समान कठिन होगा । भाषा में यह परिवर्तन धीरे -धीरे होता है - इतना धीरे -धीरे कि वह हमको मालूम नहीं होता, पर अंत में परिवर्तनों के कारण नई -नई भाषाएं उत्पन्न हो जाती हैं ।

हिन्दी में लिखे जाने वाले विदेशी शब्द :-

विदेशी शब्द हिन्दी में ध्वनि के अनुसार अथवा बिगड़े हुए उच्चारण के अनुसार लिखे जाते हैं । इस विषय का पता लगाना कठिन है कि हिन्दी में किस -किस समय पर कौन से विदेशी शब्द आए हैं पर ये शब्द भाषा में मिलगए हैं और इनमें कोई -कोई शब्द ऐसे हैं, जिनमें समानार्थी हिन्दी शब्द बहुत समय से अप्रचलित हो गए हैं । भारतवर्ष की ओर प्रचलित भाषाएं - विशेषकर मराठी और बंगला से भी कुछ शब्द हिन्दी में आए हैं । कुछ विदेशी शब्दों की सूची दी जाती हैं :-

1. फारसी - आदमी, उम्मेदवार, कमर, खर्च, गुलाब, चश्मा, चाकू, चापलूस, दाग, दूकान, बाग, मेजा इत्यादि ।
2. अरबी - अदालत, इम्तिहान, एतराज, औरत, तनख़ाह, तारीख, मुकदमा, सिफ़ारिश, हाल इत्यादि ।
3. तुर्की - कोतल, चकमक, तगमा, तोप, लाश इत्यादि ।
4. पोर्चुगीज़ - कमरा, नीलम, पादरी, मारतौल, पेरू ।
5. अँग्रेजी - अपील, इंच, कलक्टर, कमेटी, कोट, गिलास, टिकट, टीन, नोटिस, डॉक्टर, डिगरी, पतलून, फ़ंड, फीस, फुट, मील, रेल, लाट, लालटेन, समन, स्कूल इत्यादि ।
6. मराठी - प्रगति, लागू, चालू, वाडा, बाजू, (ओर, तरफ) इत्यादि ।
7. बंगला - उपन्यास, प्राणपण, चूडांत, भद्रलोग(=भले आदमी), गल्प, नितांत इत्यादि ।

****

किरण शर्मा
निरीक्षक, एर्णाकुलम -2 मण्डल

जिन्दगी की भागदौड़

जिन्दगी की भागदौड़ में,
बीत जाते हैं कितने पल
हम मायूस हो याद करते हैं वो गुजरे हुए पल
वो हर लम्हा आँखों में उभरता है
जिसमे थे नित नए सपने बुने
जिसमे थी उन सपनों को साकार करने की आरज़ू
जिसमे थे कुछ अनचाहे गम
जिन्हें जिन्दगी में न होने की करते थे तम्मना
जिसमे थे कुछ भूले बिसरे गीत
जिन्हें गुनगुनाने का होसला था भरपूर
हर पल रात को देखा सपना सा लगता
फिर उभरते लम्हों की तस्वीरें धुंधली हो जाती
तब सोचते, जिन्दगी के वो पल
रेत की तरह मुट्ठी से फिसल गए
उन्हें मुट्ठी में बांधे रखने के लिए
कुछ नमी की जरूरत पड़ी
वो नमी बरबस ही फुर्र हो गई
हर लम्हा कण कण होकर गिरता गया
ख्याल आया तो देखा कितनी दूर निकल आए
अब कणों को समेट पाना भी संभव नहीं
कुछ खुशियां और ग़म फिर आँखों में नमी बनकर उभरे
वो नमी बारिश की बूंदों के साथ मिला दी
और बीत गए वो लम्हे भी
जिन्दगी की भागदौड़ में,
लो फिर खो दिए हमने कुछ हसीन पल

एन. ललिता,
अधीक्षक, मुख्य आयुक्त कार्यालय

काल और समय का मिलन

समय क्या है ?	प्राण का श्रोत है, श्रोत का मार्ग है,फूल है, पेड़ है,
समय घड़ी पर टिकता है,	तितली है, दिल है, इन सब में मार्ग का दीप है,
सूरज का सवेरा है,	दीप का दीप्ति है, दीप्ति का ऊर्जा है, घोडा है,
साँच का अंधेरा है,	काल देव का, सृष्टि का रहस्य है, तंत्र है, मंत्र
सोने का रात है ।	है, मूल मंत्र है, ध्वनि है, प्रतिध्वनि है,
समय आदमी का है,	आकाश गंगा के घड़ी है काल
सौरमंडल का भ्रमण मात्रा है ।	फूल कल है, आज है,
कैलंडर का जनवरी, फरवरी महीने हैं ।	मधु-प्यालों को देखो,
न्यू इयर हैं, क्रिसमस है,	मधुप के वसंत, मौसम कौन मधु -बरसाते महकीन होठों /अंधेरे में ?
ईस्टर है, बक्रीद है, ओणम है, दीपावली है ।	वही है काल जो भ्रमरों की ढंग कर्म फूलों में पहुंचाती
काल है विधाता की माया	क्रिया -क्रीड़ा का भ्रमण
जिसमें विलीन है समय और मात्रा,	काल है विश्व प्रेम पराग का वाहक
जब कोई आत्मा झाँकता है	काल है अग्नि का सुवर्ण बस्म
आंखों के झरोकों से,	जलाके जो बचता है स्मृति है,
तब होता है उसका काल मोक्ष का ।	मातृभाव है काल,
सास लेते, सास छोड़ते	जो युगों को चंचल पद चलाता है ।
प्राणन के काल	वायु में काल मन मछलियाँ हैं, आकाशवाणी है,
निर्भर है उसमें,	कल-कल मयूरियों का नृत्त जीनूफर है नूर उसमें
वही सत्य है,	नीलाकाश काल का आईना है,
जो काल के हमराही है,	भूत - भविष्य का चेहरा प्रतिबिम्बित है उसमें
वही सत्य है,	काल भूमी का भ्रूण -द्रव है,
जो काल को महसूस कर	अंडों-सा-आत्मा उसे पीते, प्यार से
उसके खुशबू शीश चढाता है ।	शव रूप में शिव का दर्शन कराता,
बोध वेला है काल,	स्वार्थ अनुराग में, शक्ति स्वरूप काल खिलाता ।
बुद्ध तब जनम लेता, जब बुद्धि जनमन के	समय को भूल जा, हे मनुज,
कीचड़ से	समय केवल मृत्यू है, असत है, तमस है,
उभर आता, कमल खिलता,	काल है साक्षी, कमलाक्षी,
सूरज हँसता, बोध पौदा होता ।	आकाश गंगा के अद्भूत बीज,
काल घास है, घास का प्राण है ।	उद्भव का रहस्य ।

क्या हम और अधिक अकेला महसूस कर रहे हैं?

हम पहले से कहीं अधिक जुड़े हुए हैं - लेकिन क्या हम और अधिक अकेला महसूस कर रहे हैं?

अकेलापन आधुनिक जीवन में एक बढ़ती हुई समस्या है। हम अकेला क्यों है?
इस का मुख्य कारण आधुनिक समाज में आए हुए परिवर्तन है । सामाजिक प्रौद्योगिकी पर हमारी बढ़ती निर्भरता हमें हमारे रिसतेदारों और दोस्तों से दूर कर देती है ।

हम सामाजिक प्राणी हैं सामाजिक दर्द का अनुभव हमें शारीरिक दर्द के समान ही होती है । इस संबंध में whtsapp में आए हुए एक संदेश मैं यहाँ पेश करना चाहती हूं ।

मैं अपने चाचा के साथ बैंक में एक घंटा बिताया था, वे कुछ धन हस्तांतरण के लिए आए हुए थे, मैं अपने आप को रोक नहीं सकी और पूछा...

"चाचा, क्यों न हम अपने इंटरनेट बैंकिंग सक्रिय करते ?"

"मैं ऐसा क्यों करूंगा ?"

उसने पूछा ...

ठीक है, तो आप को यहाँ हस्तांतरण जैसी कार्यों के लिए एक घंटा बिताने की जरूरत नहीं होगी ।

आप भी अपनी खरीदारी ऑनलाइन कर सकते हैं। सब कुछ बहुत आसान होगा । "

मैं नेट बैंकिंग की दुनिया में उसे परिचित कराने में बहुत उत्साहित थी।

उन्होंने पूछा, " "अगर मैं ऐसा करूं तो, मुझे घर के बाहर कदम नहीं रखना पड़ेगा ।

"हाँ हाँ "। मैंने कहा । मैंने उससे कहा कि कैसे किराने का सामान तक भी दरवाजे पर इन साइटों द्वारा ले आते हैं ।"

उसका जवाब मुझे मौन कर दिया ।

मेरी पत्नी, कुछ दिन पहले सुबह की सैर के दौरान नीचे गिर गई थी । मेरे स्थानीय किराना दुकानदार उसे देखा और तुरंत अपनी कार में उसको घर जल्दी पहुंचा दिया ।

अगर सब कुछ ऑनलाइन हो गया तो क्या मुझे यह 'मानव स्पर्श' मिल जाता ?

क्यों मैं सब कुछ अपने घर में डेलीवर करना और मुझे सिर्फ अपने कंप्यूटर के साथ ही बातचीत करने के लिए मजबूर करना चाहूँगा ?

मैं व्यक्तियों को मिलकर उन्हें जानना चाहता हूं । इससे संबंध और रिश्ते बढ़ते हैं ।

क्या यह साइट ये सब लाकर देती है ।

प्रौद्योगिकी जीवन नहीं है ... लोगों के साथ समय बिताना ... उपकरणों के साथ नहीं ..

****

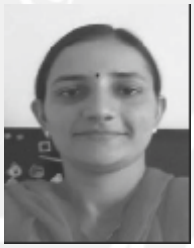

रितु बाला
श्री अरविंद गुलिया, (निरीक्षक) की पत्नी

अपंगता

क्यूं अपंगता एक अभिशाप है ?

क्या मानवता को मिला एक श्राप ?

मैं एक अपंग हूं , समाज की नजरों से तंग हूं ,

क्या आपने कभी महसूस किया है ?

बिना हाथ पाँव का इंसान कैसे जिया है ?

अरे ! दुनिया वालो ;

मदद नहीं कर सकते

तो मत मुझमें नुक्श निकालो ।

मुझ पर हँसना बंद करो ।

मैं भी जीना चाहता हूं ,

तुम सब में स्वयं को पाता हूं ।

मेरी यही अरदास है ,

अपंग नहीं, अपितु अपंगता एक अभिशाप है ।

गौरव वत्स
निरीक्षक
सेवा कर 'ए' रैंज

"एहसास"

उसके सामने फीकी थी हर पीर पर चढ़ी चादर -2
उस चादर ने एक ठिठुरते हुए तन को ढका था.....

उस एक रोटी की कीमत क्यों न लाखो मैं आँकु मैं -2
उसने एक भूखे बच्चे के पेट को भरा था.....

कीमत तब पता चली मुझे उन टूटी चप्पलों की -2
जब उसने उन्हे पहन पैरों को खुशी से देखा था.....

अहमियत ज्यादा थी खाली बोतलों की शराब से -2
मैंने खाली बोतलों के बदले उसे दूध खरीदते देखा था.....

वो जवान हुई, उसे काम मिला न भीख मिली -2
मैंने रोटियो के बदले उसे तन बेचते देखा था .....

उसके सामने फीकी थी हर पीर पर चढ़ी चादर...
उस चादर ने एक ठिठुरते हुए तन को ढका था !!

किरण शर्मा
निरीक्षक, एर्णाकुलम -2 मण्डल

मुस्कान

जीवन को सुशोभित करती
एक प्यारी सी सरल भाषा
कहलाती है मुस्कान
जो बादल सी निर्मल है
और फूलों सी कोमल है
सारे विषाद को घोलकर पी जाती है मुस्कान।
बिन कहे सब कह जाती है
कितने कलहों को अंजाम दे जाती
अंतरंगी प्यारी सी एक मुस्कान
शीतल, सच्ची, हृदय स्पर्शी
सबको भाति है मुस्कान।
तारों में भी मिल जाती है झलक
जो टिमटिमाते है यों
ज्यों लगती हैं मुस्कान
फूलों भरी डाली सी है मुस्कान ।
हृदय को तरंगित करती
छोटी सी मुस्कान
सपनों को उमंगित करती
भोली सी मुस्कान
मन के हर भेद को खोलती
निर्लज्ज सी मुस्कान ।
निर्मल जल की एक धार है मुस्कान
चाँद की राह में बैठी चकोरी के
इंतजार में हैं मुस्कान
ईश्वर की अनन्य भक्ति में भी
छिपी है एक मुस्कान
हर रिश्ते को जगमगाती
उज्जवल सी मुस्कान ।
दुखों पर काला पर्दा है मुस्कान
खुशियों में थोड़ी कमी है मुस्कान
जगजाहिर है मुस्कान
मुख पर एक प्यारी सी आभा है मुस्कान ।

सेतु आर।
कर सहायक,कोइचम मण्डल

केरल के बारे में दस दिलचस्प बातें

1. केरल में देश के सबसे अधिक मानव विकास सूचकांक (HDI) चल रहा है (0.79) साथ में उच्चतम आयु-संभाव्यता और उच्चतम महिला पुरुष अनुपात भी।

2. केरल दुनिया का पहला राज्य है जो लोकतांत्रिक तरीके से एक कम्युनिस्ट सरकार को चुनें।

3. केरल भारत का एक मात्र राज्य है जिसका नाम एक पेड़ से जुड़े हुए है।

4. केरल भारत का एक मात्र राज्य है जहां समुद्र तल से नीचे की कृषि प्रणाली (धान की खेती) हो रही है । (कूड्डनाड़ के अनोखा समुद्र तल से नीचे की कृषि प्रणाली)

5. एर्णाकुलम भारत के पहले बचत जिला बन गया साथ ही साथ देश के पहले जिला जो 100% वित्तीय समावेशन (financial inclusion) प्राप्त किया।

6. भारत में पहला मस्जिद केरल में बनाया गया था – कोडुङ्गल्लूर के चेरमान जुमा मस्जिद।

7. माना जाता है कि तिरुवनंतपुरम के पदमनाभा स्वामी मंदिर दुनिया के सबसे धनी उपासना-गृह है।

8. भारत में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों ("EVM") का इस्तेमाल सबसे पहले किया गया था, 1982 में, केरल के नॉर्थ परवूर विधानसभा क्षेत्र उपचुनाव में।

9. भारत की पहली 3 डी फिल्म (1984 में) मलयालम में केरल में बनी थी साथ ही भारत की पहली 70mm फिल्म (1982 में) भी मलयालम में केरल में ही बनी थी ।

10. पहली भारतीय महिला एथलीट एक ओलंपिक स्पर्धा के फाइनल में प्रवेश किया, केरल से थी - श्रीमती पी.टी.उषा ।

डॉ अनेज सोमराज
श्रीमती रानी सी. आर. (उप आयुक्त) के पति

ज़िंदगी में खुशी पाने का रहस्य

एक प्रसिद्ध गुरु हुआ करते थे जो लोगों के सवालों का उत्तर देते थे । लोगों को उत्तर कहानियों या अनुभव द्वारा समझाते थे । इसलिए लोग उनका बहुत सम्मान करते थे।

एक बार एक व्यक्ति ने उनसे पूछा कि ज़िंदगी में खुशी पाने का क्या रहस्य है ? गुरु ने उसे उनके साथ जंगल में चलने को कहा । निकलने से पहले, गुरु ने उसे एक बड़े भारी पत्थर उठाने को कहा । वह पत्थर लेकर गुरु के साथ नकल पड़ा । दो घंटे बाद उसे दर्द होने लगा मगर वह चुप रहा । चार घंटे के बाद दर्द असहनीय हो गया और उसने पत्थर को नीचे रख दिया । गुरु ने पूछा "तुमने पत्थर को नीचे क्यों रखा ?वह बोला, पत्थर पकड़ने से मेरे हाथों में दर्द हो रहा था । इसलिए मैंने उसे रख दिया । गुरु ने फिर पूछा, " अब पत्थर रखने के बाद, तुम्हें कैसा लग रहा है ? वह बोला, " अब मुझे सुख मिल रहा है ।" गुरु ने कहा, "हमारे जीवन में भी, इस पत्थर की तरह, दुविधाएं या मुसीबतें आती हैं । अगर हम उसे कुछ देर तक अपने पास रखे तो कोई बात नहीं मगर ज़्यादा समय तक रखने पर परेशानियां बोझ बन जाती है । जब हम पत्थर को छोड़ देते हैं तब हमें आनंद प्राप्त होता है । वैसे ही अगर हम अपने जीवन में खुशी चाहते है तो हमें अपनी निजी जीवन की परेशानियों को भी छोड़ना होगा । हमें भी अपने जीवन से दुःख और पीड़ा दूर करने के लिए, खुशियों को एक मौका देना चाहिए । खुशी का रहस्य जीवन में दुःखों का निर्वाण (abandon) ही है ।

****

किरण शर्मा
निरीक्षक, एर्णाकुलम -2 मण्डल

हसरतों के धागे

हसरतों के ये फैले धागे
निकलना है सबको इनसे आगे
कैसी कैसी ये हसरतें
होते है दिल में कितने मनसूबे
दिल को दरिया और आँखों को झरना बनाते हैं
ये हसरतों के धागे हर कोई बांटना चाहते हैं
मुकाम पा जाए फिर भी
नए रास्ते तय किया करते हैं
हसरतों के घरौंदों में
हर रोज़ रोशनी किया करते हैं
ये धागे जुड़ाव के ये धागे अलगाव के
ये बाँधते हैं सबको अपनी अपनी डोर में
हसरतों के धागे निकलना है इनसे आगे
आफ़ताब की रौशनी भी कम इन धागों को
रोशन करने के लिए
तब आँखों से नूर लिया करते हैं
हसरतों के ये धागे तब और रोशन हो जाया करते हैं
सभी को अपनी गिरफ्त में समेटे जाते हैं
कोई तोड़ दे ये सारे धागे तो वक़्त भी ठहर जाएगा उसके आगे
ये हसरतों के धागे निकलना है सबको इनसे आगे
जमीनी हकीक़त से कोसों भागे
हसरतों के ये फैले धागे

अनंत विक्रम सिंह,
निरीक्षक,समीक्षा कक्ष

ग्लास को नीचे रख दीजिये

एक प्रोफ़ेसर ने अपने हाथ में पानी से भरा एक glass पकड़ते हुए class शुरू की . उन्होंने उसे ऊपर उठा कर सभी students को दिखाया और पूछा , " आपके हिसाब से glass का वज़न कितना होगा?"

'50gm....100gm...125gm'...छात्रों ने उत्तर दिया.

" जब तक मैं इसका वज़न ना कर लूँ, मुझे इसका सही वज़न पता नहीं चल सकता". प्रोफ़ेसर ने कहा. " पर मेरा सवाल है:

यदि मैं इस ग्लास को थोड़ी देर तक इसी तरह उठा कर पकडे रहूँ तो क्या होगा ?"

'कुछ नहीं' ...छात्रों ने कहा.

अच्छा , अगर मैं इसे इसी तरह एक घंटे तक उठाये रहूँ तो क्या होगा ?" , प्रोफ़ेसर ने पूछा.

'आपका हाथ दर्द होने लगेगा', एक छात्र ने कहा.

" तुम सही हो, अच्छा अगर मैं इसे इसी तरह पूरे दिन उठाये रहूँ तो क्या होगा?"

" आपका हाथ सुन्न हो सकता है, आपके muscle में भारी तनाव आ सकता है , लकवा मार सकता है और पक्का आपको hospital जाना पड़ सकता है"....किसी छात्र ने कहा, और बाकी सभी हंस पड़े...

"बहुत अच्छा , पर क्या इस दौरान glass का वज़न बदला?" प्रोफ़ेसर ने पूछा.

उत्तर आया .."नहीं"

" तब भला हाथ में दर्द और मांशपेशियों में तनाव क्यों आया?"
Students अचरज में पड़ गए.
फिर प्रोफ़ेसर ने पूछा " अब दर्द से निजात पाने के लिए मैं क्या करूँ?"
" ग्लास को नीचे रख दीजिये! एक छात्र ने कहा.
" बिलकुल सही!" प्रोफ़ेसर ने कहा.
Life की problems भी कुछ इसी तरह होती हैं. इन्हें कुछ देर तक अपने दिमाग में रखिये और लगेगा की सब कुछ ठीक है.उनके बारे में ज्यदा देर सोचिये और आपको पीड़ा होने लगेगी.और इन्हें और भी देर तक अपने दिमाग में रखिये और ये आपको paralyze करने लगेंगी. और आप कुछ नहीं कर पायेंगे.
अपने जीवन में आने वाली **चुनौतियों** और समस्याओं के बारे में सोचना ज़रूरी है, पर उससे भी ज्यादा ज़रूरी है दिन के अंत में सोने जाने से पहले उन्हें नीचे रखना.इस तरह से, आप stressed नहीं रहेंगे, आप हर रोज़ मजबूती और ताजगी के साथ उठेंगे और सामने आने वाली किसी भी चुनौती का सामना कर सकेंगे.

हिन्दी सप्ताह समारोह 2015

ओणम समारोह -2015

नवीकृत भोजनालय का उद्घाटन

नव वर्ष समारोह -2016

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति द्वारा प्रमाण पत्र से सम्मानित किए गए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अधीक्षक श्री एम.आर.रामचंद्रन

गणतन्त्र दिवस समारोह -2016

केन्द्रीय राजस्व खेल एवं सांस्कृतिक मीट -2016

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दिवस -2016

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दिवस -2016

पाला रेंज उद्घाटन

सी बी ई सी फ़ौण्डेर्स डे पुरस्कार से सम्मानित हमारे आयुक्तालय के खेल रत्न

नया वैबसाइट उद्घाटन

नया सभा भवन उद्घाटन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - 2016

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - 2016

गौरव वत्स
निरीक्षक
सेवा कर 'ए' रेंज

"माँ"

माँ...
तपती रेत पर चलते हुए एक सुख भरी ठंडी छांव हो तुम
हर बार मझधार से बचाने वाली प्यारी सी एक नाव हो तुम...

माँ...
बेबसी के क्षणों में भी खुशी का एक एहसास हो तुम
हार कर इस दुनिया से उसे फिर जीतने का विश्वास हो तुम...

माँ...
जाने कितनी बार, जाने कितनी बार माँ...
भूख को मेरी तृप्त कर अर्ध-त्रप्त सोती हो तुम
दर्द से कराहता हुं मैं और छलक-छलक रोती हो तुम...

माँ ...
कड़ी प्यास में मिला अचानक शीतल निरमल जलघट हो तुम
हे मेरी पिंड़निर्मात्री, मेरे जीवनचक्र का पहला और आखिरी तट हो तुम...

अक्षरा हो तुम, बेमोल हो तुम
अक्षरा हो तुम, बेमोल हो तुम
हेय प्राणदायिनी, मेरे लिए...अनमोल हो तुम
अनमोल हो तुम
अनमोल हो तुम -2....!!

हिन्दी दिवस और हिन्दी सप्ताह समारोह, 2015 पर संक्षिप्त रिपोर्ट

****

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सीमाशुल्क एवं सेवकर आयुक्तालय, कोच्ची ने दिनांक 14.09.2015 से 18.09.2015 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन किया। हिन्दी दिवस मनाते हुये समारोह का शुभारंभ हुआ। कु. रेश्मा लखानी, आयुक्त महोदया ने अपने संदेश में कहा कि " हिन्दी की प्रगति के लिए इस आयुक्तालय में हिन्दी सप्ताह समारोह विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा। सभी अधिकारियों से अनुरोध है कि आप अपने-अपने कार्यालय कार्य जैसे टिप्पणी और मसौदा, पत्राचार, बिल तथा रजिस्टरों में प्रविष्टि आदि कार्यों को जितना हो सके हिन्दी भाषा के माध्यम से निपटाने का प्रयास करें। हिंदी में बात-चीत करें और बैठकों में चर्चा के लिए हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। राजभाषा अधिनियम 1963 का विशेष ध्यान रखें और राजभाषा नियम 1976 के विभिन्न नियमों का अवश्य पालन करें।"

हिन्दी सप्ताह समारोह के दौरान अधिकारियों के लिए कुल 5 प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं जिसमें गैर हिन्दी भाषी अधिकारियों तथा हिन्दी भाषी अधिकारियों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताएं चलायी गयीं । चलायी गयीं प्रतियोगिताओं के नाम और विजेता अधिकारियों के नाम निम्नलिखित हैं।

1.	हस्तलेखन (सभी अधिकारी)	प्रथम	श्री बालमुकुंद
		द्वितीय	श्री विवेक कुमार त्रिवेदी
		तृतीय	श्री राजीव कुमार शर्मा
		सांत्वना	श्रीमती अंजु के.यू.
		सांत्वना	श्री निशांत सक्सैना
2.	निबंध लेखन (केवल हिन्दी भाषी अधिकारियों के लिए)	प्रथम	श्री निशांत सक्सैना
		द्वितीय	श्री अजीत कुमार गुप्ता
		तृतीय	श्री प्रमोद कुमार सविता
		सांत्वना	श्री गौरव वत्स
3.	सुगम संगीत (सभी अधिकारी)	प्रथम	श्री लिजिन जे कमल
		द्वितीय	श्री जोसफ पीटर
		तृतीय	श्रीमती सजिता जेन्नी
		सांत्वना	श्री आनंद बाबु
		सांत्वना	श्री गौरव वत्स
4	प्रश्नोत्तरी (सभी अधिकारी)	प्रथम	श्री प्रमोद कुमार सविता

			श्री दिलीप कौशल
		द्वितीय	श्री निशांत सक्सैना
			श्री राहुल गुप्ता
		तृतीय	श्री भास्करनाथ
			श्री मल्लजीत सोनोवाल
5	कार्यालयीन शब्दों का अनुवाद	प्रथम	श्रीमती उषा नायर
		द्वितीय	श्रीमती जैस्मिन कावपुरायिल
		तृतीय	श्रीमती सुजाता एस
		सांत्वना	श्रीमती मिनी वी.के.

हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह दिनांक 18.09.2015 को अपराह्न 3.30 बजे आयुक्तालय के सभागार में श्री मैथ्यू जोली, आयुक्त,लेखा परीक्षा आयुक्तालय, कोच्चि की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । सभी वरिष्ठ अधिकारी तथा बहु संख्या में कनिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी सप्ताह के समापन समारोह में उपस्थित थे । श्रीमती सजिता जेन्नी, निरीक्षक द्वारा प्रार्थना गीत पेश किया तथा कार्यक्रम संचालक श्रीमती रोसेलिन्ड जोस थॉमस कोरुत, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक द्वारा प्रारंभिक परिचय देने के बाद श्रीमती रानी सी आर, सहायक आयुक्त ने सभी व्यक्तियों का स्वागत किया।

इस समापन समारोह में श्री मैथ्यू जॉली, आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क लेखा परीक्षा आयुक्तालय, कोच्चि, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आयुक्तालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे विभिन्न कार्यों के बारे में संक्षेप में बताया और राष्ट्रीय एकता और बोलचाल के लिए हिन्दी और अँग्रेजी के साथ साथ प्रांतीय भाषा के महत्व के बारे में भी बताया ।

श्री मैथ्यू जॉली, आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क लेखा परीक्षा आयुक्तालय के कर कमलों से प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत सभी अधिकारी को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

इस समारोह में उपस्थित व्यक्तियों के मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया । श्री लिजिन जे कमल एवं श्रीमती सजिता जेन्नी ने गीत प्रस्तुत किया । सभी उपस्थितों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी । कार्यक्रम के अंत में श्रीमती सुजाता एस., निरीक्षक, निवारक अनुभाग ने हिन्दी सप्ताह समारोह से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए अधिकारियों को धन्यवाद किया । सायं 4.30 बजे राष्ट्रीय गान के साथ समारोह सम्पन्न हुआ ।

राजभाषा अनुभाग

RANABIR BOSE,
AC, C.EX, KOCHI

FINDING HAPPINESS IN TRANSFER

" Be thine own palace or the world's thy jail"- William James. The recent 'Cadre Restructuring' in the CBEC has offered large number of promotions for the Group B officers to move to the 'Elite' Group A club. With this cherished dream, came the fear of being transferred out of your home state or adopted home state; living away from family/'friends and moving out of ones' comfort zone.. Though these fears are well founded, it only helps, if we channelise these fears and apprehensions to a source of energy and positivity. I too had my share of misgivings on my transfer to Kochi, Kerala, but a few subtle tweaks to the thought process is making my stay here a rewarding experience. I take this opportunity to share my experiences (and the subtle tweaks), in the hope that someone somewhere may find it useful someday.

2. The first subtle tweak is, to renew our 'Pride' for the job we are doing. It should be realised that we are in a prestigious department, performing an important job for our country and the 'so called' difficult situations of a transfer from one comfortable city to another, is miniscule compared to the 'real' difficult situations faced by our brothers in inhospitable frontiers like, Siachen. We owe it to these brave soldiers and many other similarly placed fellow countrymen to 'stop cribbing' about our minor difficulties, from our airconditioned cabins. Our (so called) problems, seen in the backdrop of the larger National context seems ridiculous and deserves to be banished forthwith, from our fertile minds.

3. Staying away from a family, in a new place, surrounded by new, aquaintances; friends; food; language and relations, can bring in a lot of excitement and adventure to our life. I realised that without a family to care for and my usual friends to loaf around with, leaves me with an enormous amount of time which could be gainfully utilized. Therefore, I have now renewed my dream to become a long distance cyclist and travel several countries on a cycle. Accordingly devoting myself to a suitable exercise regimen, I have also allowed myself to take up my lost habit of reading. I am exploring the 'Food scene' in Kochi which is exciting and am also seeing a lot of movies. I further plan to learn the beautiful local language, Malayali. Kerala being a state with the highest literacy rate offered no respite in the form of providing 'maids' for our usual household chores and what is available came at an exorbitant price. The only option was to 'Do it Yourself'. As I resigned to my fate and started doing things I realised that there is a lot of creativity and sense of achievement in accomplishing our own daily chores which appeared mundane and inconsequential earlier. I have honed my culinary skills and now, take great pleasure in devouring my own hard earned creations. These actions add to the realisation that the pleasures earlier taken for granted are of immense value and came out of great efforts of a spouse (and maids).

5. My experiences with the people in Kochi have been thoroughly pleasant and enjoyable. I find them to be highly efficient, courteous, warm and welcoming. The place around is beautiful, clean and vibrant. The combination of the people, place and atmosphere undoubtedly justifies the status of Kerala as "God's Own country".

Riya Salim
D/o T. P. Salim Kumar,
Assistant Commissioner

Percy Jackson and The Lightning Thief

Percy Jackson was a normal kid who lived in a boarding school until he accidentally vaporized his Maths teacher who was actually a monster from the Olympus. Later he understood that he was the son of a god. His father was the god of the sea, Lord Poseidon. This book is about the stolen lightning bolt of Lord Zeus (Poseidon' s brother) and the people in the Olympus and Zeus thought that Lord Hades , (God of death and another brother of Zeus and Poseidon) has stolen it. And Hades thought that Percy had stolen it and he sent his people to find him. Percy knows it and has to find the bolt and return it before summer solstice or else there would be a great war which may end up in world war. Actually Ares (God of anger) has stolen the bolt but things clear out and Percy is found innocent. It is a good book for someone who believes in Greek gods and monsters!!!!

Abraham Renn
Assistant Commissioner

"Most men appear never to have considered what a house is, and are actually though needlessly poor all their lives because they think that they must have such a one as their neighbors have. As if one were to wear any sort of coat which the tailor might cut out for him, or, gradually leaving off palm-leaf hat or cap of woodchuck skin, complain of hard times because he could not afford to buy him a crown! It is possible to invent a house still more convenient and luxurious than we have, which yet all would admit that man could not afford to pay for. Shall we always study to obtain more of these things, and not sometimes to be content with less? Shall the respectable citizen thus gravely teach, by precept and example, the necessity of the young man's providing a certain number of superfluous glow-shoes, and umbrellas, and empty guest chambers for empty guests, before he dies? Why should not our furniture be as simple as the Arab's or the Indian's?”

-Walden by Henry David Thoreau

N.Lalita
Superintendent,CCO

M.R.R., PRESIDENTIAL AWARDEE

The President Award for the year 2015-2016 was won by the Superintendent of Central Excise and Customs, Shri.M.R.R.Ramachandran, presently working under the Commissioner (Appeals). In recognition of his meritorious work, which was recognized and rewarded, under the auspices of the Commissioner of Central Excise, Smt.Reshma Lakhani, an elaborate felicitation ceremony was organised, with all beauty and elegance.
Madam also exclaimed that the name MRR really meant Meritorious, Recognized and Rewarded.

1. Shri M.R.Ramachandran has detected 191 cases involving Central Excise Duty/Service Tax evasion of Rs.174 Crores based on his own intelligence. Out of this an amount of Rs.49.65 Crores has been realized.
2. He has also played prominent roles in 93 other cases involving Central Excise Duty/ Service Tax evasion of Rs 29.33 Crores, out of which Rs.7.64 Crores has been realized.
3. Apart from the above, on the basis of his own intelligence 34.63 Kgs of Gold was seized and he has played a prominent role in the seizure of another 32.62 kgs of Gold.

Some of the cases are under investigation /adjudication /appeal. More realization is expected when the processes are completed. No other officer from the three Central Excise Commissionerates in Kerala has ever had such a record of detection and realization.

It is worth mentioning here that on the basis of revelations brought to light by the officer in relation to Central Excise Duty evasion by Floor Tile Manufacturers based at Morbi in Gujarat, a case was booked. Total duty evasion in these cases was Rs.156.66 Crores, out of which Rs.43.12 Crores have been realized as on date of detection itself. He also played a pivotal role in the sensational detection and seizure of 14.5 Kgs of EPHEDRINE (Psychotropic Substances) worth Rs.22 Crores while being smuggled out from Cochin International Airport by a South African Lady. He was also instrumental in the detection of 13 Kgs of Gold which was attempted to be smuggled by concealing in the ferry bus used to transport passengers from the air craft to Airport terminal. He has also daringly participated and supervised in a continuous 2 day operation in the dense forest of Munnar which culminated into destruction of fully grown Ganja Plants with potential dry Ganja valued at Rs.60 Crores, along with saplings, seeds and equipment apart from 300 Kgs of Dry Ganja worth Rs.12 lakhs.

N.Lalita
Superintendent,CCO

A Valentine Wish

Wish the world could be beautiful
and humans could love as birds do
wish hearts could jump out of bodies
and roam out and come after dating buddies

Wish my spirit could fly to spirits
from gentle stream and fragrant meadows
and hug them with tender tears
and touching eloquence.

Wish my world could be of innocent babes
born out of instant loves
just flirting around with fairy tales
and glimmering with glow worm-hearts

Wish man could love woman like the blue lagoon
with all innocence sprayed in the night's room
wish older we become, younger our hearts turn
and let millions of love spurt from purity's lawn.

Wish the hands of love and hearts of throbbing passion
does not fall into the dustbins of money vision
Wish every thought of nobility and beauty
cherish forever with love made of dove's kitty.

Rohit Ramachandran
S/o Shri M.R.Ramachandran, Supdt.of C.Ex.

Monsoon

The cool breeze,
The gushing rain.
The window's creaks,
and, the rustling leaves.

The time has come,
Where people are filled with joy.
All you have to do is keep mum,
and let the rain drum.

Feel the drop,
Feel it on the floors too.
But don't forget to mop,
As you don't want to hop.

You may see the hazy moon,
And sure to see the rainbow too.
But don't care about that loon,
Who say's boring is MONSOON.

Sethu. R
Tax Assistant, Kottayam Division

10 interesting facts about Kerala

1. Kerala is the state in India having the Highest Human Development Index (0.79) with the highest life expectancy and highest female to male ratio (2011 census).

2. Kerala is the First state in the world which democratically elected a communist government.

3. Kerala is the only state in India to have its name derived from a tree.

4. The unique Kuttanad Below Sea-level Farming System in Kerala is the only system in India that practices rice cultivation below sea level.

5. Ernakulam became India's first Bachat (Savings) District as well as the first district in the country to achieve 100% financially inclusion.

6. The first mosque in India was built in Kerala at Kodungalloor - Cheraman Juma Masjid.

7. The Padmanabhaswamy Temple in Thiruvananthapuram has the status of the wealthiest place of worship in the world, supposedly.

8. In India electronic Voting Machines ("EVM") were first used in North Paravur Assembly Constituency of Kerala in 1982 by-election

9. The first 3D movie of India (in 1984) as well as first 70 mm movie in India (in 1982) were from Kerala in Malayalam.

10. The first Indian woman athlete who entered the final of an Olympic event was from Kerala, Smt. P. T. Usha.

Bhaskarnath,
Inspector, Preventive Section

Cycling your way to health !

A recent study on lifestyle diseases such as obesity, diabetes, cholesterol and cancer revealed some startling truths about the state of health in the state of Kerala. Lifestyle diseases sometimes dubbed 'the Rich Man's' disease owing to its presence primarily amongst a strata of population who live significantly beyond the 32 rupees a day line, is really on the increase in Kerala. The irony of most of these diseases are that while some may be genetic and some environmental, most of them are a simple result of the recent advancement in technology and related industry that has allowed the common man the luxury of not having to get up off their couches to even buy food.

This got me thinking, yes we have an unusually high number of Gyms in the state. Further, the people now have a high level of awareness when it comes to changing their lifestyles and focussing on better diet and exercise. Almost everyone knows that things have to change, some of us have a need to change, sadly almost none of us have the will to do so. Running has always been considered to be the cheapest and the healthiest form of exercise. This is because the investment needed to start running is limited to a decent pair of shoes and the willingness to get out of one's house. If you have spare change to burn, you can always invest on a treadmill. That said however, the treadmill in most households is now more a clothesline than an exercise equipment.

The problem with running outdoors or on a treadmill is that running is a high impact sport since the feet have to hit the ground. This means that the load that is experienced on the joints such as your knees and the feet is immense and could lead to pain and injury especially when running on a hard surface such as the tarmac road, concrete or on the treadmill. This effect is only compounded when you are slightly on the heavier side, which should be true in most cases since people consider running as a means to lose weight.

Cycling on the other hand is the secondary sport that can be used to improve your 'cardio – vascular' health and tone your body. As opposed to running,

one is engaged in a rotary motion on the joints such as your knees whereby reducing the impact and load on the knees and feet. Due to this very reason, one is able to spend more time cycling than running as the body can sustain a prolonged effort better owing to a lesser impact. Add to this the fact that a cycle is faster compared to running and that one can cover longer distances while cycling makes cycling a very enjoyable and adventurous sport enabling us to explore new places and trails in the neighbourhood. Cycling in the morning will lead to an elevated metabolic rate throughout the day which will give us more energy and enable us to be more active throughout the day while burning those extra calories. Cycling also makes the body release endorphins into the blood stream which will give us a pleasant and happy mood with a spring in our step.

Cycling as a sport and as a hobby is gaining a lot of momentum in cities such as Cochin. A great effort in this regard was taken by the various cycling clubs mushrooming within the city, a good example being the Cochin Bikers Club. The availability of better cycling equipment and gear has also contributed to increase in the sport's popularity. With shops such as Decathlon, the Bike Store, Track and Trail and Sports XS bringing in international brands such as Giant, Merida, Rayleigh, Focus and Btwin, a cyclist is now spoilt by choice in terms of equipment. We can now buy cycles in a price range from thousands to lacs. We can now also buy good safety equipments such as disc brakes, helmets, gloves, flash lights, tail lights and cleats.

For someone who is new to cycling, the hardest decision is usually about the type of cycle to buy. This can range from a Road Bike, a Hardtail or a full suspension. The tendency of a new cyclist is to look at a full suspension cycle since it offers better cushioning in the Kerala road conditions. This however is not the case, the roads are getting better and a full suspension cycle is aimed more at mountain biking. A hardtail is a cycle with only a front suspension, this again is aimed at mountain biking but the cycles look rugged and is very pleasing to the eyes which has made it a favourite amongst the new generation cyclist. The Road bikes are very light weight machines designed purely for speed on the tarmac. These cycles have very thin tyres, no suspension and are very aerodynamic.

If one's intention is to cycle everyday on the road, then a road bike is the way forward. Road bikes tend to be on the expensive side when compared to a hardtail. Care should be taken while choosing a cycle frame. A cycle frame is the most important component and comes in Steel, Aluminium Alloy or Carbon Fibre with the prices escalating from the former to the latter. Given the choice, I would recommend investing more on a lighter frame as the rest of the equipment such as gears, brakes, tyres, wheels are all interchangeable and can be upgraded in the future. A bike fit, which is still a myth amongst cycle shops is also a very important part of selecting a cycle. A bike fit is process

by which the saddle height, saddle position and the handlebar are arranged so as to provide the best riding position to the cycle. This helps the rider in not just improving the pedalling efficiency but also reduces the risk of injuries to the knee while avoiding back pains.

Once you buy the right equipment, ensure you get yourself a helmet. One cannot emphasise this point enough when it comes to cycling. Cyclist are prone to the odd fall owing to terrain or traffic and even though the crashes usually happen at slower speeds, this could still lead to cuts, bruises and even concussion as the head hits the ground. This can be avoided to a great extend by wearing a cycling helmet. Further, a well designed helmet also gives you a good airflow through the helmet and makes you look seriously good on the bike.

If you do own a smartphone, you should go ahead and install a cycling app such as Strava or mapmyride. I personally prefer Strava as it gives accurate GPS tracked numbers on distance travelled, top and average speed and even the elevation of the ride. The app does not need an active internet connection during the ride and syncs the data online whenever we connect to the internet after the ride. The data is then presented in a wonderful format including a map showing the route we rode on. It also gives a social content to the ride by allowing you to connect with other riders in the vicinity and plan social and group rides.

Adding to the technology in cycling are fitness bands which offers additional features like activity tracking, sleep tracking and even an active Heart Rate(HR) monitoring. A good example of a HR based activity tracker is a Fitbit Charge HR and the Garmin Vivosmart HR. These bands when paired with an app such as Strava or their own apps encourages one to achieve higher goals and remain active. This is great for people who love numbers and analyse their ride aiming at improvement that is measurable. If you are not one of those, you can still enjoy a wonderful ride and the scenery without the hassle of technology wiring you down.

So for those among you looking for a fun new hobby to pick up while keeping yourself healthy or looking for an exercise to lose some flab without losing your knees or even looking for a cool new way to socialize, a cycle can be a great choice. As for me, you can usually find me on a cycle at 6.45 a.m. on the Seaport – Airport Road near Kakkanad, Cochin.

Rajesh N.V.,
LDC, Accounts Section

METAPHYSICS

The quest for immortality leads every one towards Him because the Self is burning within our heart without depending on our body, mind, intellect, sense organs and ego. To prove this just observe what happens when we are in deep sleep, then we can understand that we have no sense of body, mind, intellect and ego in deep sleep and we lose all things that we understand as our Self. In the morning, if we say that I got a deep sleep last night then who witnessed this deep sleep when all matters including mind, intellect, sense of body and ego are vanished in deep sleep. If “I” must be different from these matters like ego, mind, intellect, sense organs and body. If our self is different from the above said matters where from this 'Self' is arising in us, other persons and all other living beings? All are experiencing their 'Self' as consciousness and all matters they experience in this consciousness. Self also experiencing its own existence and the existence of others. Where from this 'Self' or 'Consciousness of self existence' arising in all living beings? In the entire period of life each one is experiencing their 'Self' separate from one another and always experiencing a distinct personality. So all living beings possess a distinct self. Now ask the question, where from this self in all living beings arise? Self, otherwise the consciousness of self existence, never arise from any other matter than consciousness. We can clear this through an example of an ocean. An ocean has waves, each wave arising from the ocean has a distinct form, and a specific period of existence as waves in the ocean and merging back in to the ocean where it loose its existence as waves. A wave in the ocean never happens from sand. Likewise our 'Self' arises from the static base of Consciousness and not from material thing like body, mind, intellect and ego. What is this static base? A wave in the ocean is the dynamic form of an ocean. When it merges back into the ocean it gains back its static form. Likewise our 'Self' or 'Consciousness of Self existence' is the smallest wave in the 'Ocean of Consciousness'(Supreme soul). We have no existence apart from this ocean of consciousness. How a wave is related to other waves, likewise we all are related to one another. How a wave is related to its ocean, likewise we all are related to our 'Static Personality' or 'Ocean of Consciousness'. The dynamic personality of a wave of the ocean is short but it gains back its static form when it merges back into the ocean. Likewise our self is the dynamic personality of the Supreme Soul. Actually a wave is not different from its ocean during its entire period of existence as a wave and after. Likewise all beings are not different from the supreme soul in their entire life and life after. All are immortals and have a life forever.

Smt. Mini V.K.
Superintendent of Central Excise

What is 'Happiness'

According to Wikipedia, happiness is "a state of mind or feeling characterized by contentment, love, satisfaction, pleasure, or joy." Here are some facts that illuminate and define happiness from different perspectives:

Philosophers, scientists, and comedians have taught us a lot about happiness. Maybe one of the most important lessons they've taught us is to **look inward** for happiness.

Sometimes it's right in front of you and you just have to grab it.

They've also taught us that **our thought patterns can limit or enable our happiness**. They've taught us that **happiness isn't static**. They've taught us that happiness isn't about things.

In fact, sometimes it's about doing … doing what we love. The other key thing is that happiness is dynamic and it's not a static state.

It's about living, learning and growing, and **rolling with the punches**. I also think it's important to think of happiness as a skill. Drive from happiness. For durable happiness, lead your happiness from the inside out. Most importantly – enjoy the process.

This is a collection of happiness quotes.

I think happiness quotes are a great way to share the wisdom of the ages and modern day sages.

I think a good quote is a like a good song … **it means something to you**, maybe even beyond the original intentions.

Top 10 Happiness Quotes

Here are my top 10 favorite happiness quotes:

1. “Happiness is a warm puppy.” – Charles M. Schulz

2. “I am a kind of paranoiac in reverse. I suspect people of plotting to make me happy.” – J.D. Salinger

3. “If you think sunshine brings you happiness, then you haven't danced in the rain.” – Unknown

4. “It is only possible to live happily ever after on a day to day basis.” – Margaret Bonnano

5. “It isn't what you have, or who you are, or where you are, or what you are doing that makes you happy or unhappy. It is what you think about.” – Dale Carnegie

6. “Most people are about as happy as they make up their minds to be.” – Abraham Lincoln

7. “Nobody can take away your pain, so don't let anyone take away your happiness.” – Unknown

8. “The art of living does not consist in preserving and clinging to a particular mode of happiness, but in allowing happiness to change its form without being disappointed by the change; happiness, like a child, must be allowed to grow up. ” – Charles L. Morgan

9. “The foolish man seeks happiness in the distance, the wise grows it under his feet.” – James Oppenheim

“The grand essentials of happiness are: something to do, something to love, and something to hope for.” – Allan K. Chalmers

Ann Mary Benny,
D/o Benny P.Jacob,Supdt.

THE ERA OF 'THE JACKS OF ALL TRADES'

"Jack of all trades, Master of none" - a figure of speech familiar to all of us, is something that has always been treated with disdain. Conventional school of thought has been to excel in one field, and one field alone. To be a vagabond in interests have always been frowned upon. The ability to focus on developing and excelling in one skill was the ultimate achievement a person could have. But with the advent of a dynamic business culture and the intense competition between organisations to deliver the best possible services to their clients, there is an increasing demand for candidates with an arsenal of attractive skills. And it goes without saying, the more marketable skills you have, the more valuable you become to the organisation.

Development of skills in different disciplines is bound to help in the career ladder. Management capabilities, leadership skills, communication skills and other soft skills are all becoming inherently required of all employees. But in addition to these, dual professionals are an attractive package to the employer. For instance, an engineer with a degree in finance is ideal to the company during the budget preparation as he/she is aware of the requirements of both the domains and can prepare a more comprehensive and complete budget than an arrangement where an engineer has to communicate his requirements to a finance professional who has to then convert this information to financial terms, causing loss of data in translation.Such combinations help reduce the costs incurred by a company in translating the business strategies or operations from one domain to another.

The possibilities are endless when it comes to combining skills. Advantages are not limited to the career sphere, but to the veritable development of the human psyche as well. Researches have often proved that individuals who continue learning, especially a new creative skill, have decreased degeneration of brain cells. More importantly, such individuals are happier than the average person.

The point of this write-up is not to discredit the need for excelling in one's domain. But the learning curve soon comes to a stagnant phase, after which the impact of the new learning is way lower than the value of time invested. It is at this phase when the opportunity cost of learning a new skill breaks even with the advantage that skill brings into the opportunities that come to us.

So find what interests you. Do not shy away from new horizons. The possibilities are endless!

Aparna Shanker

D/o. Smt. M. K. Yasoda, Administrative Officer

കാത്തിരിക്കാം

ഇന്നുമുണ്ടെന്റെ ചിന്തയിലാ സ്വപ്ന-
വർണ്ണരാജികൾ മുത്തുക്കുടകളായ്
ഇന്നുമുണ്ടെന്റെ ഹൃദയത്തിനറകളിൽ
നിന്റെ നിശ്വാസത്തെയറിയുന്ന വാക്കുകൾ
കഥകളുണ്ടേറെ മൊഴിയുമാനെങ്കിലും
അരുതെന്നു കരുതിയൊളിച്ച പൊൻവാക്കുകൾ
അകതാരിനുള്ളിലേയിന്നേവരെയും നാം
കിന്നാരമോതിയിട്ടുള്ളൂവതെങ്കിലും
നീയുമറിയുന്നു ഞാനുമറിയുന്നു
ഉള്ളിലുള്ളവികാരം പ്രണയമെ-
ന്നെങ്കിലും ഇന്നുവരെയും നാം ഒരുപനി-
നീർപ്പൂവുപോലും കൈമാറിയില്ലപോൽ
കൈമൾ കോർത്തീല ഈ നീളും വഴികളിൽ
പൂത്തുനിൽക്കുന്ന പൂക്കൾക്കു കാഴ്ചയായ്
എങ്കിലും പ്രിയതമാ നിന്നിൽ ഞാൻ കാണുന്ന-
തെന്നെയോ?, തളിർക്കും കൗമാരവികൃതിയോ?
നിശതൻ നിശ്ശബ്ദതയിൽ നാമൊത്തുനിന്നപ്പോൾ
പൂത്തീല ഒരു താര പോലും നമുക്കായി
എങ്കിലും കണ്ടുഞാൻ പൂർണ്ണചന്ദ്രൻ നമു-
ക്കായി തിരുവാതിര രാവൊരുക്കുന്നതായ്
പാടീല രാപ്പാടിയൊരുപാട്ടു പോലും
നമുക്കുള്ളിൽ പൂക്കും പ്രണയത്തിൽ താളമായ്
എങ്കിലും പ്രിയതമാ, കേൾക്കുന്നു ഞാനൊരൂ-
സുന്ദരഗാനമാ പുഴമുളീടുന്നതായ്
വരുമോ നീയൊരുവട്ടമെങ്കിലും എൻ ശൂന്യ
സീമന്തരേഖയിൽ സിന്ദൂരമണിയുവാൻ?
വരുമായിരിക്കും എന്ന പ്രതീക്ഷയിൽ
കാത്തിരിക്കാം ഞാൻ നിനക്കായ് പ്രിയതമാ....

ക്ഷണ ഭംഗുരം

അവൾ സുന്ദരിയായിരുന്നു
മനോഹരി.... ഹൂറി...
അവളുടെ ചിരിയും വാക്കും... എല്ലാം...
മനോഹരം ...

സഞ്ചരിച്ച വഴികൾ ഒന്നാണെങ്കിലും
സമയം വ്യത്യസ്തമായിരുന്നു...

പിന്നീട്, ഒരാൾ തിരക്കിൽ
അവളവനെ കണ്ടു...

ശേഷം, കോർത്ത കണ്മുനകൾ
കൈകളിലേക്ക്,
കാൽകളിലെക്ക്
ഒരാവേഗതിമിർപ്പിൽ
പ്രണയം ആളി പടരുകയായിരുന്നു....

പിന്നെ.....

ഉറക്കമുണർന്ന അയാൾ
ഒരു ചെറു ചിരിയോടെ വീണ്ടും
ബെഡ്ഡിൽ ചരിഞ്ഞു കിടന്നു.
സ്വപ്നത്തിൽ അവളെ വീണ്ടും
കണ്ടുവെങ്കിലോ !!!

-ടി.പി.സലിം കുമാർ.

रोसेलिंड जोस थॉमस कोरुतु
कनिष्ठ अनुवादक

चुट्कुले

1	मास्टर जी- 1 अप्रैल को मुर्ख दिवस क्यों कहते है? पप्पू- हिंदुस्तान की सबसे समझदार जनता, पूरे साल गधों की तरह कमा कर 31st मार्च को अपना सारा पैसा टैक्स में सरकार को दे देती है। और 1st अप्रैल से फिर से गधों की तरह सरकार के लिए पैसा कमाना शुरू कर देती है। इस लिए 1st अप्रैल को मुर्ख दिवस कहते हैं।
2	कुंवारा लड़का: मुझे शादी नहीं करनी। मुझे सभी औरतों से डर लगता है। पिता: कर ले बेटा। फिर एक ही औरत से डर लगेगा। बाकि सब अच्छी लगेंगी।
3	ट्रेन में वार्निंग लिखी थी... बिना टिकिट सफर करने वाले यात्री होशियार। सरदारजी यह लाइन पढ़ कर क्रोधित हो गया । वाहजी ये कोई बात हुई बिना टिकिट सफर करने वाला होशियार, हमने टिकिट लिया तो हम बेवकूफ़

4	बाबु - साहब, आप आफिस में शादीशुदा आदमियों को ही क्यों रखते हो ? साहब - क्योंकि उन्हें बेइज्ज़ती सहने की आदत होती है और घर जाने की जल्दी भी नहीं होती ....
5	शादी के बाद पहली बार बहू रसोई मे गई और रेसिपी बुक में पढ़कर खाना बना रही थी । सास बाहर से घर लौटी... फ्रिज खोला, अन्दर देखकर चकराई और पूछा: "ये मन्दिर का घण्टा फ्रिज में क्यों रखा है ?" बहू : "किताब में लिखा है, सब चीजों का मिश्रण कर लें और एक घण्टा फ्रिज में रखें ।"

कुमारी अनुपमा सूसन कोरुत, कक्षा -3, श्रीमती रोसेलिंड जोस कोरुत, क.अनुवादक की सुपुत्री

मास्टर वरुण विनोद, कक्षा -5, श्रीमती श्रीलेखा विनोद, निरीक्षक का सुपुत्र

कुमारी निष्का सिंह,कक्षा - 2, श्री शशिकांत सिंह, निरीक्षक की सुपुत्री

मास्टर वी.जे.हरी, कक्षा -10, श्री वे.एस.जयकुमार, हवलदार का सुपत्र

उत्तम राजभाषा कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोच्चि की राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी -तृतीय स्थान पर केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा शुल्क एवं सेवा कर आयुक्तालय, कोचिन

केरल की मुज़िरिस विरासत /Kerala Muziris Heritage

मुज़िरिस, केरल का एक समृद्ध, प्राचीन और विनष्ट ऐतिहासिक बंदरगाह था जो पहली शताब्दी ईस्वी में केरल में मौजूद था ।

Muziris, a rich, ancient and extinct historical glory of Kerala, was an ancient port that existed here during 1st century AD.

मुज़िरिस विरासत के स्मारक /Muziris heritage monuments –

कीयताली शिव मंदिर/ Kizhthali Siva Temple

Kizhthali Siva Temple is one of the four Tali temples in Kodungallur in Thrissur District of Kerala which is believed to be existed from Perumal reign of Chera Dynasty who were Shiva believers.

चेरमान जुमा मस्जिद /Cheraman Juma Masjid

Cheraman Juma Masjid located in Methala village of Kodungallur town of Kerala. It is the first and the oldest mosque built on the land of India.

कोट्टक्काव चर्च /Kottakkavu Church

Kottakkavu Church is located in Parur town in Kerala and is an important Muziris Heritage Site. It is believed that the Persian Cross, which is preserved in the chapel in front of the church, might have been engraved in rock in 880 AD.

परवुर यहूदी आराधनालय/ Paravur Jewish Synagogue

Paravur Jewish Synagogue located in Jewish Street of North Paravur in Ernakulam district is another Muziris Heritage site which is a place of worship for the Jewish community who settled here in this region during historic times.